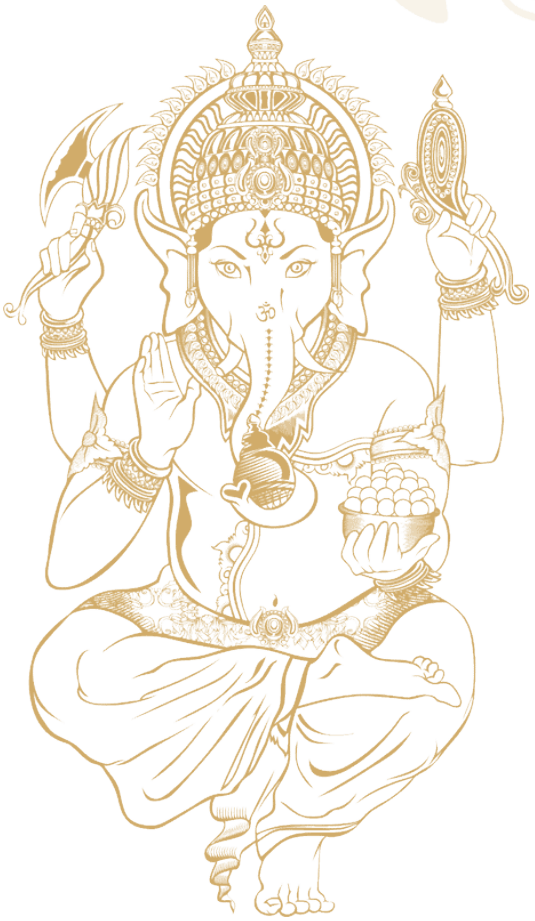

D/O VIKAS VAISHNAV

01 Sep 2025

02:18 PM

Pushkar River

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119344401**

तिथि 01/09/2025 **समय** 14:18:00 **वार** सोमवार **स्थान** Pushkar River **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:00
अक्षांश 26:28:00 उत्तर **रेखांश** 74:36:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:31:36 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	12:29:29 घं
वेलान्तर	00:00:00 घं
सूर्योदय	06:11:23 घं
सूर्यास्त	18:51:12 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	शुक्ल
तिथि	9
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	विष्कुम्भ
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	यू-युवराज
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

बुध 3वर्ष 7मा 18दि
बुध
01/09/2025
20/04/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	01/09/2025
गुरु	11/08/2026
शनि	20/04/2029

योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 0मा 25दि
भद्रिका
01/09/2025
26/09/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	01/09/2025
पिंगला	06/10/2025
धान्या	08/03/2026
भ्रामरी	26/09/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:09:21	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			14:58:05	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	मूलत्रिकोण	1.90	मातृ	पितृ	विपत
चंद्र			27:09:01	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	गुरु	नीच राशि	1.27	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			21:56:05	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि	1.12	भातृ	भातृ	प्रत्यारि
बुध			03:31:22	सिंह	मघा	2	केतु	सूर्य	मित्र राशि	0.89	कलत्र	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			23:43:17	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.30	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र			13:46:57	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	शत्रु राशि	1.17	पुत्र	कलत्र	अतिमित्र
शनि	व		05:46:53	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.22	ज्ञाति	आयु	अतिमित्र
राहु	व		24:10:44	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		24:10:44	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

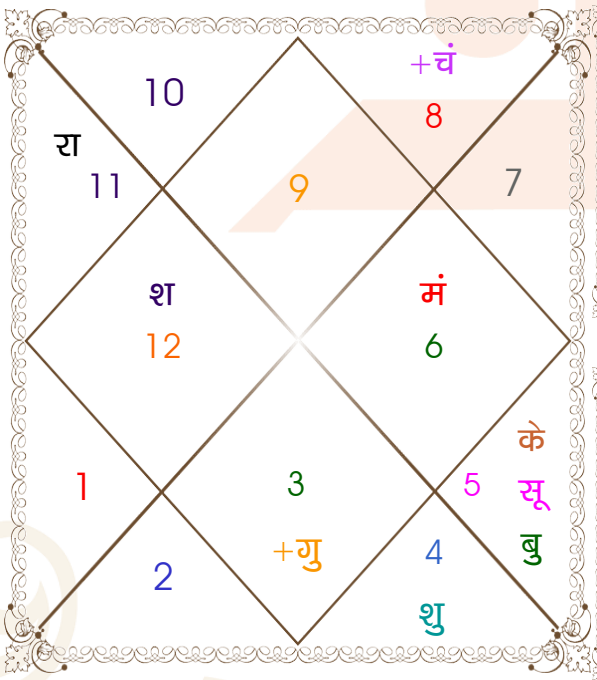

चन्द्र कुंडली

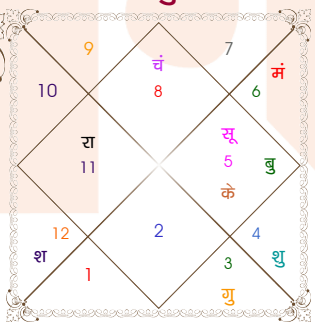

नवमांश कुंडली

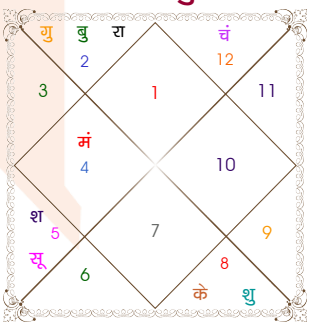

सर्वाष्टकवर्ग

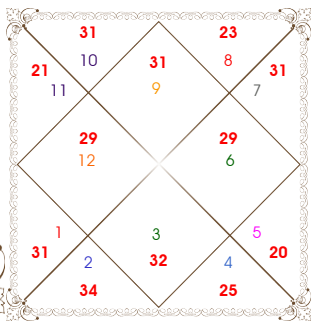

दशमांश कुंडली

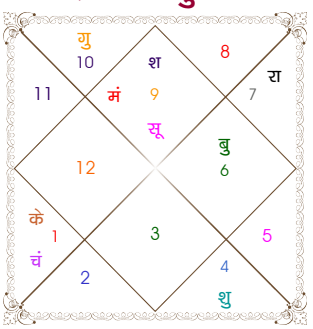

Gayatri jyotish karyalaya
Sojat Road, Rajasthan 306103, India
9799364202, 9929276521
rakeshvyas1988@gmail.com

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, नाड़ी आद्य, योनि मृग, गण राक्षस तथा वर्ग मृग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "यु" या "यू" से प्रारम्भ होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए हैं। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न होने से जातक के पिता को अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से शान्ति सम्पन्न करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए। 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए नक्षत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। यह सारा कार्य किसी योग्य एवं विद्वान व्यक्ति से सम्पन्न करवाना चाहिए। इस प्रकार विधि विधान द्वारा शान्ति करने से इसका दोष नष्ट हो जाता है तथा संबंधित जातक सुखपूर्वक रहता हैं।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आपकी प्रसिद्धि समाज में दूर दूर तक व्याप्त रहेगी तथा सभी लोग आपके विषय में पूर्ण ज्ञान रखेंगे। आपका स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा तथा कान्ति एवं कोमलता से युक्त रहेगा। सर्वप्रकार से आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा वैभव एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही सामर्थ्य का भी आप में अभाव नही रहेगा। आप एक प्रतापी पुरूष होंगे तथा समाज में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रखेंगे। अपने क्षेत्र में आप एक प्रतिष्ठित तथा श्रेष्ठ पुरूष समझे जाएंगे तथा सभी लोग आपको श्रद्धापूर्वक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप एक उच्चकोटि के वक्ता होंगे तथा अपने वक्तव्यों से जनसाधारण को भी प्रभावित करने में सफल रहेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आप को क्रोध शीघ्र ही आएगा इसमें कई बार आपको मानसिक तथा आर्थिक कष्ट

का भी सामना करना पड़ेगा। आपके सामाजिक संबंध विस्तृत होने के कारण महिलावर्ग से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा ईश्वर एवं धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा विद्यमान रहेगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत होगा तथा बहुत से लोगों से आपकी मित्रता रहेगी परन्तु आप इसमें मुख्य तथा लोकप्रिय रहेंगे। साथ ही आप प्रवृति से ही सन्तोषी होंगे तथा वर्तमान उपलब्धि पर ही सन्तुष्ट रहेंगे। लेकिन धर्म का पालन करते हुए भी क्रोध पर नियंत्रण करने में आप सर्वदा असफल सिद्ध होंगे।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

लेखन कार्य में आपकी रूचि प्रारम्भ से ही रहेगी। अतः आप काव्य सृजन के क्षेत्र में सफल हो सकेंगे। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा सुख दुःख को आप समान रूप से मांगने वाले होंगे। आप अत्यन्त ही चतुर व्यक्ति होंगे तथा इसी चतुराई से जीवन में सफलता अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त निम्न श्रेणी के लोगों के लिए आप अत्यन्त ही पूज्य तथा श्रद्धेय रहेंगे। ये लोग मन से आपका सम्मान करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को

प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

वृश्चिक राशि में जन्म लेने के कारण आपका वक्षस्थल विशाल होगा तथा आखें भी बड़ी एवं सुन्दर होंगी। आपकी पिंडलियां तथा जाघें गोलाकार रहेंगी। आपके वर्ण में श्यामलता का भी अल्प मात्रा में मिश्रण रहेगा। आपके हाथ या पैर में मछली का चिन्ह अकित रहेगा एवं अधिकांश हस्त रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की होंगी। पिता तथा गुरूजनों से आप सामान्य में सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बाल्यकाल में काफी बीमार भी रहेंगे। आप एक बुद्धिमान तथा योग्य व्यक्ति होंगे तथा अपनी योग्यता के बल पर राज्य में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित करने में सफल रहेंगे। आप अधिकांशतया कूर तथा कठोर कर्मो को ही सम्पन्न करेंगे। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों को अपना कार्यक्षेत्र चुनेंगे। कभी कभी आप अत्यन्त ही दुष्टता का भी प्रदर्शन करेंगे जिससे अन्य व्यक्ति कष्ट की अनुभूति करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका पेट तथा मस्तक भी दीर्घ आकार का होगा तथा आपके स्वभाव में लोलुपता का भाव भी रहेगा। अन्य जनों की सुन्दर वस्तुओं को देखकर आपका मन अत्यन्त ही लालयित रहेगा। साथ ही शरीर में कोमलता भी विधमान रहेंगी। आप का धर्म तथा ईश्वर में विश्वास रहेगा। आपकी दाढ़ी तथा नाखून में चोट के निशान भी रहेंगे। आप एक समृद्धशाली पुरूष होंगे तथा धनैश्वर्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। आप किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे तथा इन्हे सम्पन्न करने में अत्यन्त ही चतुर रहेंगे। आपको बन्धुजनों से इच्छित सहयोग की प्राप्ति होगी। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रहेगा। आप स्वभाव से ही उग्र रहेंगे तथा सरकार के द्वारा आर्थिक हानि प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अपने परिश्रम के अतिरिक्त अन्य कई जनों का पालन पोषण करने में सक्षम रहेंगे। स्त्रियों के विषय में आप एक सौभाग्यशाली पुरूष होंगे। इनसे आपको पूर्ण सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होगी। आपकी सरकारी सेवा में भी नियुक्ति हो सकेगी। दूसरे के धन को प्राप्त करने में भी आपके मन में बलवती इच्छा रहेगी तथा

आजीवन आप इसके लिए प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप अत्यन्त ही दृढसंकल्प के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगे। आप एक बहादुर व्यक्ति होंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

जीवन में कभी कभी आप जुआ आदि खेलने के लिए भी उद्यत रहेंगे परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। आपकी प्रवृति विवाद करने के लिए भी रूचिशील रहेगी तथा अन्य जनों से आपका विवाद होता रहेगा। आप कभी कभी अपने आपको हृदय से अत्यन्त ही कमजोर समझेंगे। तथा जीवन में आपको अधिकांश अशान्ति की ही प्राप्ति होगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही घर से बाहर निवास करेंगे तथा भ्रमण के भी आप अत्यन्त शौकीन होंगे। आपका स्वभाव अभिमानी रहेगा तथा समय समय पर अन्य जनों में आप इसका प्रदर्शन करते रहेंगे। अपने बन्धु वर्ग तथा संबंधियों के प्रति भी आपके मन में प्रेम का भाव रहेगा। परन्तु जीवन में अपने साहस के द्वारा धनार्जन करने में आप पूर्ण रूपेण सफलता अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त आप निपुण भी रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप का स्वभाव कभी कभी व्यर्थ की बातें बोलने वाला होगा। आप हृदय से भी कठोर रहेंगे तथा दयाभाव का प्रदर्शन कम ही करेंगे। साहस का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा इसके द्वारा अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव उग्रता से युक्त रहेगा तथा शीघ्र ही क्रोधित होना आपकी प्रवृति रहेगी। समाज में अन्य लोगों से आपका परस्पर विवाद होता रहेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। अतः शारीरिक शक्ति का आप में अभाव परिलक्षित नही होगा परन्तु अधिकांश जनों का आपके प्रति हमेशा विवाद का भाव रहेगा।

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपकी शारीरिक आकृति सुन्दर होगी परन्तु आपकी वाणी कभी कभी कठोर होगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः आप को आपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शब्दो का प्रयोग

करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में जन्म होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रिय रहेंगे तथा समस्त कार्यकलापों को बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के सम्पन्न करेंगे। आपकी प्रवृति हिंसात्मक नहीं होगी अपितु शान्त रहेगी। साथ ही श्रेष्ठ साधनों के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगे। सत्य के अनुपालन में आप सर्वथा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इसे पूर्ण करेंगे। अपने बन्धु तथा स्वजनों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय एवं स्नेह से युक्त रहेंगे। ईश्वर तथा धर्म के प्रति आप पूर्ण रूप से निष्ठावान रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप परस्पर विवाद आदि में भी सर्वथा बहादुरी का परिचय देंगे तथा इसमें विजय प्राप्त करेंगे।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यो के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके

भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए एवं नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए साथ ही सोमवार तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। इसके अतिरिक्त सोना, मूँगा, ताँबा, रक्तवस्त्र, रक्तचन्दन, गेहूँ, मलका इत्यादि पदार्थो का किसी योग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा मंगल के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप पूर्ण करवाने चाहिए। इससे आपको पूर्ण रूपेण मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभफलों में न्यूनता होगी एवं भविष्य के लिए लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।

मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।